Shiv Dhyan Mantra

करचरण कृतं वाक्कायजं कर्मजं वा,
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधं ॥

विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व,
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥

अर्थ : *हे शिव भगवान, आप अनंत दयालुता के सागर हैं। कृपया मेरे हाथों और पैरों, शब्दों, मेरी आँखों, कानों और दिमाग से उत्पन्न हुई सभी गलतियों और मेरे कर्मों को, जो जाने या अज्ञात में किए गए हैं, क्षमा करें। आपकी कृपा से मेरा जीवन परिपूर्ण हो। धन्यवाद।*

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं,
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।

पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

अर्थ : *जिनकी श्वेत कान्ति चाँदी के पर्वत की भांति है, जो सुंदर चन्द्रमा को आभूषण मानते हैं, जिनके शरीर की चमक रत्नमय अलंकार से है, उनके हाथ में परशु और मृग, वर और अभय की मूद्राएं हैं, जो आनंदित हैं, पद्मासन में आराम करते हैं, जिनके चारों ओर देवताओं का समूह स्तुति करता है, जो बाघ की त्वचा पहनते हैं, जो विश्व के आदि, जगत की उत्पत्ति के बीज और सभी भयों को नष्ट करने वाले हैं, जिनके पाँच मुख और तीन नेत्र हैं, उन महेश्वर का प्रतिदिन ध्यान करें।*